International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070, Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 29-01-2021, Accepted: 14-02-2021, Published: 31-03-2021
Volume 7, Issue 2, 2021, Page No. 50-52

पहाड़ी कोरवा जनजाति के परांपरागत वैवाहिक, धार्मिक मान्यताएं एवं परिवर्तन का समाजशास्त्रीय अध्ययन

Veena Kujur[1], Akhil Yadu[1*], Nister Kujur[3]
[1] Research Scholar, Department of Sociology, Govt. J. Yoganandam Chhattisgarh College, Raipur, Chhattisgarh, India
[2] Associate Professor, SOS Sociology and Social Work. Pt. Ravishankar Shukla University, Raipur, Chhattisgarh, India

सारांश
विश्व की सभी जनजातियों में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार ही छत्तीसगढ़ के पहाड़ी कोरवा जनजातियों की भी अपनी मान्यताएं हैं। पहाड़ी कोरवा जनजातियों में मान्यताएं बहुत ही विस्तृत हैं। मान्यताओं को जनजातीय समाज का प्रमुख तत्व माना जा सकता हैं। जिसका निर्वहन करना प्रत्येक जनजातीय समाज के सदस्यों को अनिवार्य होता हैं। जनजातीय समाज का सम्पूर्ण जीवन मान्यताओं से भरा पड़ा हैं। जीवन का प्रत्येक कार्य वे अपनी मान्यताओं के अनुसार ही करते हैं। इनके लिये धार्मिक त्यौहार व धार्मिक उत्सव महत्वपूर्ण होते हैं। जिसके लिए वे मनौती पूर्ण होने पर चढ़ावा चढ़ाते हैं। इस शोध पत्र में छत्तीसगढ़ के कोरवा जनजातियों के वैवाहिक व धार्मिक मान्यताओं पर परिवर्तन से संबंधित तथ्यों का उल्लेख किया गया हैं।

मूल शब्दः पहाड़ी कोरवा, जनजाति, परंपरागत मान्यताएं, परिवर्तन

प्रस्तावना
कोरवा जनजाति छत्तीसगढ़ के एक पिछड़ी व आदिम अवस्था में निवास करने वाली जनजाति हैं। कोरवा जनजाति की उत्पति के संबंध में ब्रिटिश प्रशासकों एवं विद्वानों के दो मत रहे हैं। एक मत तो यह रहा हैं कि ये आदिवासी छोटा नागपुर जिले बारवाह भी कहा जाता रहा हैं, में पाये जाने वाले मुण्डा जनजातियों के उप–समूह हैं। इस संदर्भ में यह उल्लेखनीय हैं कि छोटा नागपुर भारत में पाई जाने वाली कई प्रमुख प्रजातियों का मूल निवास स्थल हैं। ये आदिवासी मूल रूप से मुडंई शाखा से ही सम्बद्ध रहे हैं जो कि वृहद एशियाटिक परिवार का एक उप–परिवार सरीखा रहा हैं। परन्तु इस संबंध में कर्नल ई.टी.डाल्टन का मत दूसरा हैं ''डिस्क्रिप्टिन इथगेलॉजी ऑफ बंगाल'' नामक अपनी पुस्तक में उन्होनें कहा हैं कि कोरवा कोलेरियन श्रृंख्ला की ही एक कड़ी हैं। ये छोटा नागपुर (बारवाह) के प्राचीनतम मूल निवासी 'असूरो' के ही मिले जुले रूप हैं। किन्तु असुरों व इनमें ज्यादा विभिन्नता नही हैं सिवाय इसके कि वे (कोरवा) लोहा गलाने का कार्य करते थे, व ये (असुर) खेती का कार्य।

पहाड़ी कोरवा
पहाड़ी कोरवा देश के 75 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है, यह जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के जशपुर, सरगुजा व कोरबा जिले में निवास करती हैं। कोरवा जनजाति के उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के विचारों में भिन्नता रही हैं, उनमें से एक मत यह हैं कि यह जनजाति छोटा नागपुर जिसे बरवाह भी कहा जाता हैं में पाये जाने वाली जनहात झुण्ड का उपसमूह हैं। जनगणना 1931 में मुण्डई शाखा से संबद्ध जनजाति माना गया हैं। डॉल्टन (1972) ने कोरवा जनजाति को कोलेरियन श्रृंख्ला की एक कड़ी कहा हैं। रसैल एवं हीरालाल (1916) ने छोटा नागपुर के पठार को इनका निवास क्षेत्र बतलाया हैं।

कोरवा जनजाति के उपसमूह
इस जनजाति समूह ने खुड़िया और सीमावर्ती सरगुजा राज्य के दूरस्थ पहाड़ियों की व बीहड़ जंगलों को अपने रहने का स्थान बनाया। खुड़िया में निवास करने वाली खुड़िया रानी (देवी) इनकी ईष्ट देवी बनी। जंगल काटकर 'दहिया खेती' करते हुए षिकार व जंगली कंद–मूल पर आश्रित जंगल थे। पहाड़ियों एवं दूर–दराज के जंगलों से आकर जो कोरवा नीचे के ग्रामीण अंचलों में बसे वे स्थानीय बोली में डिहारिया अर्थात् डिहरिया कोरवा कहलाये। परंतु जो कोरवा इतने प्रयास करने पर भी ग्रामीण व मैदानी अंचलों में अपना अनुकुलन स्थापित करने में असमर्थ रहें, तथा राजकीय तंत्र से बचाने के लिए, अधिक बीहड़ व दूरस्थ पहाड़ियों एवं कंदराओं मे चले गए वे पहाड़ी कोरवा कहलाए। पहाड़ी कोरवा अन्य दूसरे नामों से भी जाने जाते हैं, इनकी अपनी बोली में इन्हे ''अरंधा'' कहा जाता हैं। वनों में रहने के कारण इन्हे पड़ोसी आदिवासी ''वनैला'' के नाम से पुकारते हैं। इसके अतिरिक्त इन्हे ''खरकिया'' भी कहा जाता हैं। थोड़ा खेती करने के कारण इन्हे ''वानगरिया'' भी कहा जाता हैं।

कोरवा जनजाति का विकास
समय की पर्त पर प्रतिबिम्बित पदचिन्हों के अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता हैं कि कोरवा अपने मूल निवास क्षेत्र (छोटा नागपुर – बारवाह) से धीरे–धीरे चलकर एक लम्बी समयावधि में पश्चिम की ओर से झरग और घाटियों में होते हुए कन्हार नदी के दक्षिण में भूतपूर्व जशपुर स्टेट (वर्तमान में जशपुर तहसील, जिला जशपुर) के खुड़िया क्षेत्र में प्रतिस्थापित हुए। यह नहीं कहा जा सकता हैं कि इस युग की किस अवधि या तारिख में ये बीहड़ घने वनाच्छादित इलाकों में बसावह की तथा वहां के मूल निवासी कहलाए। इस तहर कालान्तर में यह सामुदाय छोटे–छोटे समूहों में सीमावर्ती सरगुजा राज्य (वर्तमान सरगुजा जिला व रीवा, डाल्टन के अनुसार रीवा में पाई जाने वाली 'कुर' जनजाति की उत्पत्ति कोरवा से ही मानी जाती हैं) के पर्वतीय अंचलों में समाहित होते हुए बिहार राज्य के ऊंचे पर्वतीय इलाकों (पलामू) में बसते हुए पुनः आगे बढ़ते हुए विंध्य की तुंग पहाड़ियों तथा उत्तरप्रदेश के दुद्सी क्षेत्र से होते हुए मिर्जापुर के पहाड़ी अंचलों में बस गए।

शोध अध्ययन का उद्देश्य
- कोरवा जनजाति के परम्परागत वैवाहिक मान्यता में प्रभाव का अध्ययन
- कोरवा जनजाति के धार्मिक क्रिया–कलाप एवं मान्यता में परिवर्तन का अध्ययन
- कोरवा जनजाति के तीज–त्यौहार एवं मान्यताओं में परिवर्तन का अध्ययन

शोध अध्ययन का निदर्शन

शोध अध्ययन के चयन हेतु जशपुर जिले के बगीचा विकासखण्ड के दो ग्राम पण्ड्रापाठ व मधुपुर का चयन किया गया तथा शोध की पूर्णतः हेतु दोनों गांव में से कुल 120 उत्तरदाता (पहाड़ी कोरवा जनजाति) का चुनाव दैव निदर्शन के लॉटरी पद्धति के अनुसार किया गया।

तालिका 1

क्रमांक	गांव का नाम	परिवार की संख्या	चयनित उत्तरदाताओं की संख्या
1	पण्ड्रापाठ	1088	75
2	मधुपुर	55	45
	योग	1143	120 (10.5 प्रति.)

उपरोक्त सारणी के अनुसार समग्र के 10.5 प्रतिशत का चयन उत्तरदाता के रूप में किया गया है।

वर–वधु के चुनाव हेतु मान्यता

वर्तमान में विवाह हेतु वर–वधु चुनने के परंपरागत मान्यताओं में अत्यधिक परिवर्तन देखने को मिलता हैं प्रायः आधुनिक विचार के युवक–युवती स्वयं अपने पसंद से विवाह कर लेते हैं। कोरवा जनजाति के समाज के लोगों में भी परंपरागत मान्यता में परिवर्तन देखने को मिला हैं। अध्ययन से प्राप्त तथ्यों का विवरण इस प्रकार हैं

तालिका 2

क	मान्यताएं	वर्तमान में		योग		एक पीढ़ी पूर्व		योग	
		हां	नही			हां	नही		
		आवृ.(प्रति)	आवृ.(प्रति)	आवृ	प्रति	आवृ.(प्रति)	आवृ.(प्रति)	आवृ	प्रति.
1	माता–पिता द्वारा	49(40.8)	71(59.2)	120	100	89 (74.2)	31 (25.8)	120	100
2	रिश्तेदारों द्वारा	57 (47.5)	63(52.5)	120	100	86 (71.7)	34(28.3)	120	100
3	स्वयं द्वारा	82 (68.3)	38 (31.7)	120	100	48 (40)	72 (60)	120	100

उपरोक्त सारणी से प्राप्त होता हैं कि एक पीढ़ी पूर्व जो जीवनसाथी के चुनाव हेतु वैवाहिक मान्यताएं थी, उनमें व्यापक परिवर्तन वर्तमान में देखने को मिला हैं। जो आधुनिकता का द्योतक हैं, जीवनसाथी के चुनाव वर वधु द्वारा स्वयं करने संबंधी तथ्य सर्वाधिक प्राप्त हुए हैं।

वैवाहिक रस्म (नेंग) का स्वरूप

पहाड़ी कोरवा के वैवाहिक कार्यक्रम में नेंग (रस्म) को ज्ञात करने का प्रयास किया गया, कि कोरवा जनजातियों में क्या–क्या नेग और रस्म होते हैं? प्राप्त तथ्यों का विवरण तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं।

तालिका 3

क्र.	नेंग (रस्म) का स्वरूप	घर देखी नेंग		चीज दिखावन नेंग		हल्दी नेंग		चुमावन नेंग		पानी भरण नेंग	
		आवृ	प्रति.	आवृ	प्रति.	आवृ	प्रति.	आवृ	प्रति.	आवृ	प्रति.
1	लोटा पानी (खान–पान के लिए आमंत्रित करना	98	81.7	–	–	–	–	–	–	–	–
2	वधु पक्ष द्वारा दिया गया सामान व नेंग सही हैं, या नही इसका पता लगाना	–	–	92	76.66	–	–	–	–	–	–
3	मड़वा गड़ाना	–	–	–	–	99	82.5	–	–	–	–
4	लड़की की विदाई	–	–	–	–	–	–	95	79.16	–	–
5	लड़की विवाह होने के पश्चात् पहली बार घर के लिए पानी लाती हैं	–	–	–	–	–	–	–	–	96	80
6	अन्य	22	18.33	28	23.33	21	71.5	25	20.83	24	20
	योग	120	100	120	100	120	100	120	100	120	100

वैवाहिक कार्य सम्पन्न कराने में मध्यस्थ की भूमिका में परिवर्तन

प्रत्येक समाज में विवाह एक मुख्य संस्कार हैं, जिससे परिवार की उत्पत्ति होती हैं। प्रायः जनजाति समाज में वैवाहिक कार्यक्रम में जनजाति बुजुर्ग, व जनजाति पुरोहितों का सहारा लिया जाता हैं। अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि 2.5 (3) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैवाहिक कार्य सम्पन्न कराने हेतु ब्राम्हण का सहारा लेने की बात कही हैं, क्योंकि वे शैक्षणिक व आर्थिक रूप से उच्च हैं, जिनमें संस्कृतिकरण का प्रभाव देखा गया हैं, जो आवश्यक रूप से नगरीकरण के प्रभाव को इंगित करता हैं। तथा 3.33 (4) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैवाहिक कार्य सम्पन्न कराने हेतु पादरियों की भूमिका की बात कहीं हैं, जो धर्म परिवर्तन से प्रभावित हैं, ये परंपरागत पहाड़ी कोरवाओं की वैवाहिक संस्कृति पर नगरीकरण के प्रभाव को दृष्टिगोचर करते हैं।

तीज–त्यौहार में खान–पान में परिवर्तन

जनजाति समुदाय में तीज–त्यौहार प्रायः प्रकृति आधारित टोटम व देवी–देवताओं पर आधारित होता हैं, तथा उन्हीं के अनुसार खान–पान, चढ़ावा, अथवा प्रसाद परांपरागत तरीकों से तैयार किया जाता था, जिसमें धार्मिकता का बोध जनजाति समुदाय की अपनी संस्कृति को प्रदर्शित करती थी, परंतु अध्ययन से ज्ञात होता हैं कि यातायात व आधुनिक शिक्षा के प्रभाव के कारण 86 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने परंपरागत तीज–त्यौहार में आधुनिकता एवं कृत्रिमता के प्रभाव को स्पष्ट किया हैं।

पहाड़ी कोरवा के धार्मिक क्रियाकलाप व मान्यताएं

धर्म ईश्वरीय भक्ति से जुड़ा हैं। कोरवा जनजाति के लोग अलौकिक शक्ति, आत्माओं व टोटम में विश्वास करते हैं। वे प्रत्येक कार्यो एवं संस्कारों में अपने अलग–अलग देवी देवताओं की पूजा करते हैं। कोरवा जनजातियों की प्रमुख देवी खुड़िया रानी हैं, जिसे वे जनकल्याण के लिए पूजते हैं, उसी प्रकार ग्रह देव की पूजा व महामारी के बचाव के लिए ठाकुर देव की पूजा की मान्यता हैं। शोध अध्ययन से धार्मिक मान्यता सम्बन्धित तथ्यों को विवरण तालिका में प्रदर्शित किया गया हैं

तालिका 4

क्र.	अवसर	मान्यताएं	हां	नही	योग
			आवृ (प्रति)	आवृ (प्रति)	आवृ (प्रति)
1	खुड़िया रानी की पूजा	जन–कल्याण के लिए	120(100)	–	120(100)
2	गृह देव की पूजा	बच्चे के जन्म के 6वे दिन गृह शुद्धिकरण हेतु	116(96.7)	4(3.3)	120(100)
3	पितृ देव की पूजा	परिवार के कल्याण के लिए	102(85)	18(15)	120(100)
4	ठाकुर देव की पूजा	महामारी के बचाव के लिए	98(81.7)	22(18.3)	120(100)
5	धारती माता की पूजा	अधिक फसल पाने के लिए	113(94.2)	7(5.8)	120(100)

उपरोक्त तालिका से ज्ञात होता हैं, कि धार्मिक मान्यताओं में अभी भी नगरीकरण, बाह्य आधुनिकता का प्रभाव नही देखा गया हैं। शिक्षित अथवा अशिक्षित कोरवा जनजातियों में अभी भी धार्मिक मान्यताओं का महत्व व्याप्त हैं। विशेषकर खुड़िया रानी (देवी) में कोरवाओं की मान्यताएं शत् प्रतिशत व्याप्त हैं।

परंपरागत मान्यताओं में परिवर्तन के कारण

हमारे समाज में समय के साथ –साथ परिवर्तन स्वभावित हैं, परिवर्तन व्यक्ति के जीवन का हिस्सा हैं। समय के साथ प्रत्येक व्यक्ति में परिवर्तन आता हैं। कोरवा जनजाति के लोग धीरे–धीरे शिक्षित हो रहे हैं। जिसके कारण उनमें कुछ बदलाव देखने को मिलता हैं। इस अध्ययन में परंपरागत मान्यताओं में परिवर्तन के कारण को ज्ञात करने का प्रयास किया गया हैं जिसका विवरण इस प्रकार हैं।

तालिका 5

क्र	परिवर्तन के कारण	आवृत्ति	प्रतिशत
1	आधुनिक शिक्षा का प्रसार	52	43.4
2	यातायात एवं संचार के साधनों का प्रसार	47	39.1
3	नगरीकरण	21	17.5
	योग	120	100

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता हैं, कि जनजाति परंपरागत संस्कृति एवं मान्यताओं में कहीं न कहीं आधुनिकता को बोध पाया जा रहा हैं, चाहे वह प्रत्यक्ष रूप (शिक्षा का प्रसार, यातायात, संचार, नगरीकरण) हो या अप्रत्यक्ष रूप जिसमें समुदाय द्वारा अनुशरण करना शामिल हैं। जिससे परंपरागत मान्यताओं का ह्रास होते जा रहा हैं। जिसका प्रभाव जनजाति संस्कृति पर द्विभाजन स्वरूप स्पष्ट हो रहा हैं। जहां एक ओर परंपरागत संस्कृति हैं तथा दूसरी ओर आधुनिकता का प्रभाव। जिससे सम्मिलन से परंपरागत मान्यताएं एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी पर आधुनिकता के प्रभाव को परिलक्षित करते हुए, आगे बढ़ रही हैं।

Reference

1. Baghel S, Chakravarty M. Jaspur Jile ki vishesh pichhdi janjati Pahari Korwa Adim Janjati Mein Vivah Sanskar. Vanyajiati,2004:1:38-42.
2. Baghel S, Chakravarty M. Socio-Economic and Demographic Profile of Primiyive Tribal Group. Hill Krwa of Jaspur. Research Zone,2010:2:2:49-55.
3. Rizvi BR. Hill Korwas of Chhattisgarh: A Study of Tribal Economy. New Delhi: Gyan Punlishing House, 1989.
4. Srivastav M. Chhattisgarh ke Pahadi Korwa Janjaati ki Samajik Arthik Dasha. Raipur: Chhattisgarh Hindi Granth Akadmik,2009.
5. Srivastava VK. The Pahari Korwas: Socio Economic Condition and their Development. New Delhi: Sonali Publication,2007.
6. Khan Irshad. Ethographi Profile of the Hill Korwa: A Particularly Vulnerable Tribal Group (PVTGs) of Chhattisgarh. Research Review International Journal of Multidisciplinary,2018:10:415-422.